॥ श्री द्वारकेशो जयति ॥

व्रतोत्सव

विक्रम संवत् २०६७, शोभन नाम संवत्सरे
शालिवाहन शाके १९३२, विकृत नाम संवत्सरे
श्री वल्लभाब्द ५३२-५३३
सन् २०१०-२०११

तृतीय पीठाधीश्वर
गोस्वामी श्री व्रजेशकुमारजी महाराज
काँकरोली
की आज्ञानुसार प्रकाशित

उत्सव तथा व्रतन की

टिप्पणी

प्रकाशक

श्री पुष्टिमार्गीय तृतीयपीठ प्रन्यास

काँकरोली

टिप्पणी निर्माण संपादन

श्री बिन्दुलाल शर्मा, काँकरोली

मुद्रक

श्री हरि प्रिन्टस

लाड एपार्टमेन्ट, पोलोग्राउन्ड के सामने, बडौदा.

तृतीय पीठ श्री द्वारकाधीश मंदिर, कांकरोली संबंधित जानकारी के लिये मुलाकात कीजिये

www.vallabhkankroli.org

"विज्ञप्ति"

श्रीमद् जगदगुरु श्री वल्लभाचार्य तृतीय पीठ प्रन्यास की और से पुष्टि सम्प्रदाय के व्रतोत्सवों की अद्यावधि उपलब्ध विभिन्न टिप्पणियों का परिशीलन कर तथा कुछ आधुनिक विद्या के केलेंडरों का अभ्यास कर एक नये प्रकार की टिप्पणी के प्रकाशन का प्रारम्भ किया जा रहा है। जिस में भगवत्सेवा रसिक जनों के साथ ही सामान्य जन–समाज के उपयोग को भी लक्ष्य में रख कुछ विशेष सूचनादि यथा स्थान किये गये है।

तृतीय गृह के वैष्णव समाज के लाभार्थ श्री द्वारकेश प्रभु के यहां मनाये जाने वाले उत्सवादि विशेष रूप से निर्दिष्ट है, साथ ही कुछ संग्रहणीय चित्र और मननीय वचनामृत भी निवेशित किये गये है। आशा हैं संहृदयजनों का मानसोल्लास वर्ष यात्रा का पाथेय बनेगा।

चैत्र शुक्ल पक्ष — संवत २०६७
श्री वल्लभाब्द ५३२ — मार्च-२०१०

तिथि	वार	ता.	उत्सव — वसंत ऋतु : रवि उत्तरायणे
१	मंगल	१६	नूतनवर्षारम्भ
२	बुध	१७	
३	गुरु	१८	गणगौर
४	शुक्र	१९	
५	शनि	२०	
६	रवि	२१	षष्ठपुत्र श्री यदुनाथजी को उत्सव (१६१५)
७	सोम	२२	
८	मंगल	२३	उत्सव श्री व्रजभूषणजी (१८३५) नवमी का क्षय
९	बुध	२४	श्री रामनवमी व्रत, उत्सव श्री व्रजभूषणजी (१६३६) श्री बालकृष्णलालजी के लालजी
१०	गुरु	२५	व्रत की पारणा, जन्मदिन गो. श्री गोपाललालजी, कोटा
११	शुक्र	२६	कामदा ११ व्रत, श्री महाप्रभुजी के उत्सव की बधाई
१२	शनि	२७	
१३	रवि	२८	
१४	सोम	२९	
१५	मंगल	३०	पूर्णिमा, श्री द्वारकाधीशजी को छप्पनभोग उत्सव (१९८१) श्री भाभीजी महाराज कृत, वैशाख स्नानारम्भ

निझ वैशाख कृष्ण पक्ष (गु.चैत्र) संवत २०६७
श्री वल्लभाब्द ५३२-५३३ मार्च-अपैल २०१०

तिथि	वार	ता.	उत्सव — वसंत ऋतु : रवि उत्तरायणे
२	बुध	३१	प्रतिपदा को क्षय
३	गुरु	१	अप्रैल
४	शुक्र	२	
५	शनि	३	
६	रवि	४	जन्मदिन गो. श्री त्रिलोकी भूषणजी (श्री शिशिरकुमारजी) काँकरोली व गो. श्री विट्ठलनाथजी (लालमणिजी) कोटा-मुंबई
७	सोम	५	उत्सव श्री द्वारकाधीशजी के साथ श्री मथुराधीशजी बाग में बिराजे (१९६६), पाटोत्सव श्री विट्ठलनाथजी, नाथद्वारा
८	मंगल	६	
९	बुध	७	
९	गुरु	८	नवमी की वृद्धि
१०	शुक्र	९	पाँच स्वरुपोत्सव ति. श्री गोवर्धनलालजी कृत
११	शनि	१०	वरुथिनी ११ व्रत, महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यचरण को उत्सव (१५३५), श्री वल्लभाब्ध ५३३ प्रारम्भ
१२	रवि	११	
१३	सोम	१२	
१४	मंगल	१३	
३०	बुध	१४	अमावस्या, मेष संक्रान्ति प्रात: ५.५० पे बैठे तासूं पुण्य काल सूर्योदय सूं है। सतुआ प्रात: गोपीवल्लभ में धरावे।

अधिक वैशाख शुक्ल पक्ष

श्री वल्लभाब्द ५३३

संवत २०६७

अप्रैल-२०१०

तिथि	वार	ता.	उत्सव वसंत-ग्रीष्म ऋतु : रवि उत्तरायणे
१	गुरु	१५	पुरुषोत्तम मास को प्रारम्भ
२	शुक्र	१६	
३	शनि	१७	
४	रवि	१८	
५	सोम	१९	
६	मंगल	२०	ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ
७	बुध	२१	
८	गुरु	२२	
९	शुक्र	२३	दसमी को क्षय
११	शनि	२४	
१२	रवि	२५	कमला ११ व्रत
१३	सोम	२६	
१४	मंगल	२७	
१५	बुध	२८	पूर्णिमा

अधिक वैशाख कृष्ण पक्ष (गु.वैशाख) संवत २०६७

श्री वल्लभाब्द ५३३ अपैल–मई २०१०

तिथि	वार	ता.	उत्सव ग्रीष्म ऋतु : रवि उत्तरायणे
१	गुरु	२९	व्यतिपात दानादि के लिये श्रेष्ठ
२	शुक्र	३०	
३	शनि	१	मई
४	रवि	२	
५	सोम	३	
६	मंगल	४	
७	बुध	५	
८	गुरु	६	
९	शुक्र	७	
१०	शनि	८	
११	रवि	९	वैधृति
१२	सोम	१०	कमला ११ व्रत
१२	मंगळ	११	द्वादशी की वृद्धि
१३	बुध	१२	
१४	गुरु	१३	
३०	शुक्र	१४	पुरुषोत्तम मास समाप्ती, अमावस्या, दानादि के लिये श्रेष्ठ